Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560 (UIF)
Volume - 5 | Issue - 10 | Nov - 2015

प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन में मानव की सहभागिता

डॉ.रश्मि शिखा
व्याख्याता, भूगोल विभाग, नागेन्द्र झा महिला महाविद्यालय,
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

परिचय –

एक समय था जब प्रकृति ने अपने उपहारों द्वारा मानव को धन्य किया प्राकृति ने अपने उपहारों द्वारा मानव को धन्य किया प्राकृतिक सम्पदा से समृद्ध पृथ्वी पर मानव सभ्यता की भूख ने ऐसी पाँव फैलाई कि प्राकृतिक सम्पदा विनाश की कगार पर पहुँच गया। आधुनिकता की होड़ ने प्राकृतिक संसाधनों का नाश कर अपनी अद्यमता का परिचय दिया है। परिणाम है प्रचुर आपदा की संभावना। प्राकृतिक संसाधन के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि तकनीकी वर्चस्व के नाम पर इसके प्रबन्धन की उपेक्षा हुई है। हमें प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के लिए संसाधन के केन्द्र बिन्दु ''मानव'' से सामाजिक संवेदनात्मक प्रक्रिया ग्रहण किरनी होगी। इस दृष्टि से प्रस्तुत पत्र में प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के मानवीय आयाम एवं मानव की सहभागिता को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

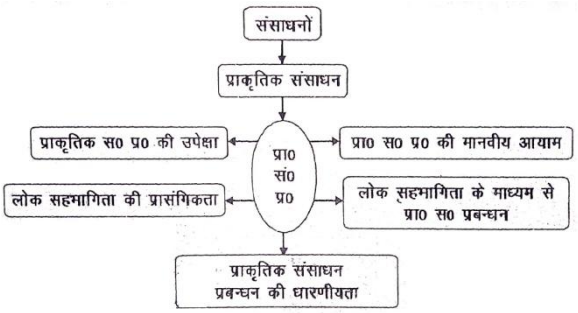

0.1 संसाधन

'संसाधन होते नहीं बनाए जाते हैं, यह कहावत संसाधन के सद्उपयोगिता के साथ चरितार्थ होती है। संसाधन की पहचान मूलतः गुणात्मक है। अर्थात् संसाधन में अनिवार्यतः सभी विशिष्ट तत्वों के सद्उपयोग की आवष्यकता होती है। तत्वों के उपयोग से ही उनके मात्रात्मक तथा गुणात्मक आयाम उन्हें संसाधन बनाते हैं। वास्तव में, मानव के द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उपयोग किया जाने वाला सभी प्राकृतिक या रूप परिवर्तित चीज 'संसाधन' है। संसाधन एक हस्तो है जो किसी आर्थिक प्रणाली में उपयोगिता/मूल्य पैदा करने में सक्षम होती है। जैसे 'आमेजन बेसिन प्राकृतिक धरोहर से परिपूर्ण होने के बावजूद अगर उनकी सद्उपयोगिता नही तो वे संसाधन प्रधान क्षेत्र नहीं है।

0.2 प्राकृतिक संसाधन

''प्राकृतिक संसाधन'' मानव शक्ति की रूप रेखा है। यह जैव श्रृंखला के अवयव संस्थान हैं, जो जनसंख्या के क्रियान्वयन के लिए आवष्यक ही नहीं अति आवश्यक हैं। इसके अन्तर्गत वातावरण के सभी तत्व शामिल होते हैं यथा–पानी हवा, खनिज, जंगल, सूक्ष्म अवयव, जंगली जीवन, जैव विविधता तथा मानव, जिसके उपयोग हम मनुष्य कल्याण विकास को बढ़ावा देने में कर सकते हैं।

संसाधन के विष्लेषण में ''मानव'' के लिए यह कहना अतिषयोक्ति नहीं होगी कि ''सभी संसाधन घट रहें हैं, सिर्फ 'मानव' ही एक ऐसा संसाधन है, जो बढता ही जा रहा है।'' आवष्यकता है, मानव की सद्उपयोगिता बढ़ा कर संसाधन प्रबन्धन करने की। जब मानव का उपयोग जैव श्रृंखला कल्याण और विकास के लिए होता है तभी मानव 'संसाधन' बनता है और 'मानव संसाधन का निर्माण सही आचरण के विकास एवं षिक्षा से ही संभव है। सही आचरण का अर्थ है अपने आस–पास के पर्यावरण से ताल–मेल बैठाते हुए भविष्य को ध्यान में रखकर विकास करना जैसे– झारखण्ड के आदिवासी क्षेत्र में जहाँ लोग पशु की तरह जीवन व्यतीत कर रहे थे वहाँ उनके षिक्षा–दीक्षा से क्षेत्र विषेष का काफी विकास हो रहा है, वे स्थानीय संसाधन यथा–बांस, ताड़ के पत्ते आदि का सद्उपयोग कर रोटी कमा रहें है।

0.3 प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन की अपेक्षा

''प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन वह प्रबन्धन है जिसके द्वारा पृथ्वी तल, पृथ्वी की प्रस्तर निर्माण कारी परत और जलमंडल का मानवीय उपयोग इस प्रकार हो ताकि यह वर्त्तमान पीढ़ी को जीवनधारण योग्य लाभ दे सके साथ ही भावी पीढ़ी की लालच का नहीं, वरन् अपनी शक्ति की रक्षा करते हुए उसकी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति कर सकें।

ज्ब हम प्रकृतिक संसाधन प्रबन्धन के सम्बन्ध में ''दृष्टिकोणों'' पर विस्तार से विचार करते हैं तब एक निष्चित अर्थप्रणाली के अन्तर्गत पालन की जाने वाली प्रक्रिया की और निर्देष होता है, यथाः

निर्माण	सुरक्षा	प्रमाणीकरण
रक्षण	पुनर्ग्रहण	तकनीकी ज्ञान
पुनर्उत्पादन	प्रदूषण नियंत्रण	जल प्रबन्धान
संरक्षण	विलोपण	निरीक्षण
पुनर्उपयोग	सामाजिक घेरा	अंकेक्षण
नवीकरण	एकीकरण	मानव सहभगिता

0.4 प्राकृतिक संसाधन और मानवीय आयाम

दिनों–दिन प्रकृतिक संसाधन प्रबन्धन एक जटिल कार्य बनता जा रहा है। प्रकृतिक संसाधन प्रबन्धन के मानवीय आयाम को ध्यान देने, बढ़ाने तथा एक अनुसंधान क्षेत्र के रूप में निर्माण करने की आवष्यकताहैं ताकि विलुप्त प्राय संसाधन की भविष्यवाणी को साझेदारी से मानव समझ सके एवं अपने विचार से प्रकृतिक वातावरण को प्रभावित करे। प्रारम्भिक क्रिया–कलाप के हर एक कदम मर मानव समझदारी पूर्ण सहभागिता की आवष्यकता है जो प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के साथ–साथ उनका विकास भी कर सके। प्रकृतिक संसाधन प्रबन्धन में मानव की क्षमता का निर्णय करना एक बहुत बड़ी शर्त बन गई है। ऐसा नहीं है कि मानव की क्षमता में जागरूकता की कमी है। किन्तु एक विषिष्ट पौराणिक रूप मे प्रषिक्षित प्राकृतिक संसाधन यथा– मिट्टी, पानी, कृषि–विकास, जीव–जन्तु–पालन, वन–रोपन, जंगली–जीवन का प्रयोग इत्यादि अनिष्चित है। आवष्यकता है विचार मंथन की, कि कैसे सुनिष्चित करे, इनके प्रयोग को? कैसे समझौता करे मानव समस्या के साथ?

''अब सवाल उठता है?''

(क) क्या है, मानव की क्षमता? (ख) मानव क्षमता महत्वपूर्ण क्यों?

(क) क्या है, मानव की क्षमता?

मनव की क्षमता का विचार 1970 में मनुष्य के दिमाग मे आया। जब प्राकृतिक संसाधन के ह्रास से उसके प्रबन्धन की बात सामने आई। अब सवाल उठता है, लोग ऐसा क्यों सोचे एवं करें? क्योंकि यह मानव के महत्व से सम्बन्धित है, उनके विष्वास, विचार, जीवन, स्तर के आचरण एवं प्रेरणा के जा सुगन्ध फैलते हैं वही प्राकृतिक संसाधन प्रबन्ध में सहायक होते हैं। जैसे– बच्चों को षिक्षा दी जाती है कि बड़ो का आदर करो, छोटों को प्यार दो, तो वे बचपन से वैसा ही आचरण करते हैं। अगर उनमें संवर्द्धन संरक्षण की आदत डाली जाएगी तो वे उसी प्रकार व्यवहार करने लगेंगे।

(ख) मानव क्षमता महत्वपूर्ण क्यों?

प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के केन्द्र में मानव है। वास्तव में मानव का आचरण ही प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन को सुनिष्चित करता है। जिसे स्थानीय पारिस्थितिकी के अनुसार विषिश्टता प्रदान करते हुए दुबारा निष्चित करने की आवष्यकता है। प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन की सफलता, उससे सामंजस्य, मानव की पूर्ण समझदारी एवं निष्चित संघर्ष से संभव है। प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन में मानव की क्षमता के साथ–साथ जागरूकता का भी काफी महत्व है।

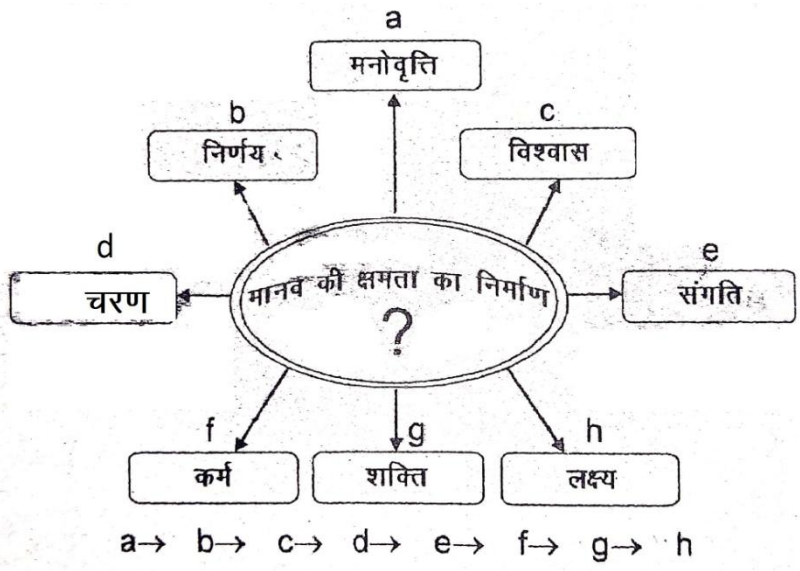

मनोवृत्ति बनानी होगी दृढ़ निर्णय लेना होगा मन में विश्वास रखना होगा लक्ष्य के अनुसार आचरण करना होगा संगति अर्थात् मानवीय आयाम से जड़ना होगा लक्ष्य प्राप्ति हेतु कर्म करना होगा कर्म ही शक्ति बनेगी लक्ष्य प्राप्ति होगी।

0.5 प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन में व्यवहार और निर्णय–निर्माण

वास्तव में प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन में व्यवहार और निर्णय–निर्माण में तीन बातों की प्रमुखता होती है:–

आस्था, दृष्टिकोण, व्यवहार।

आस्थाः– वस्तु का वर्णन इसके बारे में हम किस तरह की सोच रखते हैं यह कैसी अनुभूति प्रदान करती है यह हमारी नैतिक मूल्यों से किस तरह मेल खाती है।

दृष्टिकोणः– वस्तु का सकारात्मक अथवा नकारात्मक मूल्यांकन।

व्यवहारः– मानव जाति से अथवा प्राकृतिक पर्यावरण से व्यवहार के फलस्वरूप जो क्रिया परिस्थितियों में परिवर्तन करती है।

उदाहरण स्वरूपः–

''मै पुथ्वी पर उत्पन्न घास, मोथा को नष्ट नहीं करता क्योंकि मुझे उनकी परवाह नहीं।''

- दृष्टिकोण को दर्शाता है। उनसे होने वाली हानि का ज्ञान नहीं।
- अतः व्यवहार को बदलने के लिए ज्ञान को बदलिए।
- मानव के ज्ञान में परिवर्तन कर व्यवहारिक बनाना एक कठिन कार्य।

0.6 लोक सहभागिता की प्रासंगिकता

प्राकृतिक संसाधन का अधिकाधिक प्रयोग एवं आधुनिकता की होड़ हमारे लाक समाज की ही देन है। समाज के सभी वर्ग के लोगों को प्राकृतिक संसाधन का ज्ञान देना, व्यवहार करना, विवेकपूर्ण रक्षण तथा पुनर्निर्माण/नवनिर्माण के लिए प्रेरित करने में भी लोक सहभागिता की आवष्यकता है ताकि प्रा0 स0 प्र0 के ज्ञान को गंगा बहाने के लिए बनाए गए संगठन शिविर प्रचार माध्यम स्कूल या कॉन्फ्रेन्स इत्यादि से लाभान्वित होने वाले प्रत्येक व्यक्ति अपने आस–पास के समाज को भी शिक्षित और व्यवस्थित करेंगे। तभी प्रा0 स0 प्र0 सम्बन्धित जटिल कार्य का क्रियान्वयन हो सकेगा। अतः इस प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन में लोक सहभागिता, संरक्षण एवं प्रबन्धन के वे सामाजिक प्रयास हैं जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण रक्षण तथा नव–निमाण संभव है।

मानवीय आयामी की सूचना की आवश्यकता

- प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित हमारे सार्वजनिक मूल्यों का ज्ञान और समझदारी।
- प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित षिक्षा और उन्नत संदेश।
- प्राकृतिक संसाधन संबंधी निर्णयों के प्रभाव की समझ और भविष्यवाणी।
- प्राकृतिक संसाधन संबंधी निर्णयों में मानवीय अयामों को लागू करने के माध्यम से प्राकृतिक संसाधन व्यवसाय को मजबूत बनाना।

एन.आर.एम में लिंग आयाम

जंगल काटना, जल का अभाव, मिट्टी की उत्पादकता का भिन्न घटना कृषि एवं औद्योगिक रासायनिक पदार्थों का अवस्थान आदि। पुरूष एवं स्त्रियों को भिन्न–भिन्न रूपों में प्रभावित करते है। खाद्यान्न के उत्पादन एवं सुरक्षा में स्त्रियों की अहम भूमिका होती है किंतु उत्पादन एवं सुरक्षा प्रषिक्षण में उनकी पहुँच नगण्य होती है अतः प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में स्त्री–पुरूष की भागीदारी पर उचित निर्णय होना चाहिए।

समुदाय आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन

इस प्रबंधन की सफलता के लिए समुदाय की भूमिका की आवश्यकता स्वतः सिद्ध है।

प्रबंधन–प्रक्रिया

- स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का विचार।
- उत्पादों के सामान्य उपयोग की दिशा।

एन. आर. एम. में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान

ग्रामीण जनता अकसर अपनी जीविका के लिए प्राकृतिक संसाधन पर निर्भर करती है। इसमे वह स्वदेशो तकनीक का इस्तेमाल करती है। अतः स्वदेशो तकनीक पर भी विचार होना चाहिए।

- पशुपालन में पशु एवं वनस्पति के विभाजन में स्वदेशो ज्ञान को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- स्वदेशो ज्ञान भले ही पुराना हो पर अर्वाचीन पद्धति में उसे भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- विषैले पौधों का इस्तेमाल दवा के रूप में किया जाता है। लेकिन लोग नहीं समझते कि इसके क्या दुष्परिणाम होते हैं। उनके दुष्परिणामों को उजागर करना।
- स्वदेशो ज्ञान वाले अपने वर्चस्व के लिए कभी कभी अपने ज्ञान को छुपाने की कोषिष करते हैं। जबकी ज्ञान बाँटने से बढ़ता है, समाज कल्याण में उसका उपयोग होता हैं।
- स्वदेशो ज्ञान वाले अपने ज्ञान को लिपिबद्ध नहीं करते इसलिए स्वदेषी ज्ञान का प्रयोग कठिन प्रतीत होती हैं।

एन. आर. एम. मं लोगों की भागीदारी

इस भागीदारी के संबंध में बहुत–सी व्याख्याएँ हुई हैं किंतु ग्राम्य विकास के संबंध में विद्वान कोहने औ अपहॉफ (1977) की व्याख्या का प्रभाव पड़ा है कि 'लोगों की भागीदारी का अर्थ है प्रक्रियाओं में निर्णय की भागीदारी, कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में भागीदारी, लाभ में भागीदारी।'

भागीदारी साधन के रूप में

पारस्परिक सहयोग एवं सहकर्म भागीदारी का साधन होता है। भागीदारी लक्ष्य–साध्य के रूप में भागीदारी द्वारा कुशलता, ज्ञान और अनुभव की प्राप्ति इसके साध्य के रूप में आती है।

भागीदारी का उद्देश्य निम्नलिखित है

- ढाँचागत संबंधों और लोगों की कुशलता और क्षमता का कर्त्ता में महत्व।
- विकास के कार्य–क्रमों एवं योजनाओं में लोगों द्वारा अपनाए गए तरीके और तकनीकियाँ।

भागीदारी के प्रकार

- हस्तकर्म
- योजना का डिजाइन
- सर्वानुमति निर्माण
- निर्णय–निर्माण
- सहकारिता
- आत्म–प्रबंधन

भागीदारी और योजना–चक्र

समस्या	सूचना दो	रात मशविरा करो	सक्रिया	स्वीकृति	आत्म प्रबंधन
पहचान					
योजना निर्माण					
कार्यान्वयन					
मूल्यांकन एवं पर्यवेक्षण					
प्रभाव आकलन					

0.7 लोक सहभागिता के माध्यम से प्रकृतिक संसाधन प्रबन्धन

हमारे पास प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं। उनका वितरण असमान है, अतः लोक–सहभागिता के माध्यम निम्न रूप में होने चाहिए–

(1) प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन में प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण और उनकी विषेषताओं एवं गुणों का मापन शामिल होता है। भविष्य में प्राकृतिक संसाधनों के शोषण की मात्रा का प्रतिषत एवं उनकी गुणवत्ता तथा वितरण की जानकारी के साथ–साथ उनके वर्त्तमान उपयोग में सही दिषा निर्देष आवष्यक है।

(2) संसाधनों के सर्वेक्षण का मूल्यांकन एवं सम्भावनाओं को निर्धारित करने के लिए तकनीकी, प्रौद्योगिकी, आर्थिक स्थिति, परितंत्र और समाज की छोटी तथा लम्बी अवधि की नीतियों और समस्याओं के समाधान की दृष्टि से जाँचना–परखना आवश्यक है।

(3) प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन एवं विकास समयानुसार हो तो तथा इस घटक में सम्भावना के यथार्थ और वास्तविक नव–परिवर्त्तन होगें।

0.8 प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन की धारणीयता

प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन अर्थात् 'संरक्षण' यानि लोगों को संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए तथा उनके अत्यधिक उपयोग, दुरूपयोग और असामाजिक उपयोग को छोड़ने के लिए प्रेरित करना है।

हमारा संसाधन प्रबन्धन वर्तमान विकास को बाधित किए बिना विवेकपूर्ण अपयोग पर बल देता है। इसका उद्देष्य वर्तमान की आवष्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य के परितंत्रिय संतुलन को भी बनाए रखना है। ताकि भावी पीढी के लिए भी संसाधन संरक्षित एवं सुरक्षित हो सके।

पुस्तक स्रोत

- एन.सी.आर.टी – संसाधन भूगोल
- परीक्षा मंथन – पर्यावरण समग्र–सामान्य अध्ययन हैंडबुक
- प्रतियोगिता दर्पण/ मार्च 2007
- प्रतियोगिता दर्पण/ सितम्बर 2007
- मनोरमा इयर बुक 2007 आरक्षण
- विज्ञान प्रगति – जून 2006
- प्लानिंग एवं मैनेजमेन्ट ऑफ नेचुरल रिसोर्स – प्रो0 सुरेश प्रसाद सिंह